स्वागत भाषण
प्रो. (डॉ.) निशीथ राय
कुलपति, डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष श्री राम नाईक; मुख्य अतिथि भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश माननीय श्री न्यायमूर्ति दीपक मिश्र; श्री साहब सिंह सैनी, माननीय मंत्री विकलांगजन विकास विभाग, उत्तर प्रदेश; श्री अनिल कुमार सागर, सचिव, विकलांगजन विकास विभाग, उत्तर प्रदेश; विश्वविद्यालय की सामान्य परिषद, कार्यपरिषद एवं विद्यापरिषद के सम्मानित सदस्यगण; विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति; विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के गणमान्य प्रतिनिधि; महाविद्यालयों के प्राचार्य; विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष, प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षकवृंद, मीडिया प्रतिनिधि, देवियों एवं सज्जनों। मैं विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह में आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ। आप सभी की गरिमामयी उपस्थिति से विश्वविद्यालय परिवार अभिभूत है।

मुझे ऐसे विश्वविद्यालय के प्रथम पूर्णकालिक कुलपति होने का गौरव प्राप्त है जिसकी स्थापना उत्तर प्रदेश सरकार के विकलांगजन विकास विभाग द्वारा समावेशी उच्च शिक्षा के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के सशक्तिकरण एवं पुर्नवास द्वारा उनको मुख्यधारा में जोड़ने के मूल उद्देश्य से वर्ष 2008 में की गई। माननीय राज्यपाल, उत्तर प्रदेश इसके कुलाध्यक्ष एवं माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश इसकी सामान्य परिषद के अध्यक्ष हैं। विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 की धारा 2 (एफ.)व 12 (बी.) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त है। सम्प्रति विश्वविद्यालय में आठ संकायों–विशेष शिक्षा,कला,वाणिज्य, विधि,संगीत एवं ललित कला, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी के अन्तर्गत 26 विभाग क्रियाशील हैं। समस्त पाठ्यक्रमों में 50 प्रतिशत सीटें दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए और इसमें से 50 प्रतिशत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए आरक्षित हैं। एक ही कक्षा संरचना में दिव्यांग एवं अन्य विद्यार्थी एक साथ पढ़ाई करते हैं। विश्वविद्यालय का शैक्षिक समावेशन का यह अनूठा प्रतिमान है। संप्रति लगभग 3000 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इनमें लगभग 510 दिव्यांग हैं।

विश्वविद्यालय में शैक्षणिक उन्नयन एवं पुनर्वास कार्यों के सुदृढ़ीकरण हेतु कुछ विशिष्टीकृत केन्द्रों की भी स्थापना की गई है। बधिर विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं की संपूर्ति हेतु 'भारतीय सांकेतिक भाषा एवं बधिर अध्ययन केन्द्र' स्थापित है। इसके अन्तर्गत सांकेतिक भाषा के माध्यम से उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त इन्टरमीडिएट के समकक्ष दो वर्षीय प्री–डिग्री सर्टीफिकेट कोर्स फॉर डेफ स्टूडेन्ट्स' संचालित है। इसका मूल उद्देश्य उन बधिर विद्यार्थियों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना है जो किन्ही कारणों से हाईस्कूल से आगे की पढ़ाई नहीं कर सके हैं। इस कोर्स को करने के बाद उन्हें उच्च शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन के विकल्प उपलब्ध होंगे। इस केन्द्र की पठन–पाठन एवं शोध क्रियाओं के संवर्द्धन एवं मानकीकरण हेतु लंकाशायर विश्वविद्यालय (यूनाइटेड किंग्डम) के 'इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन लैंग्वेज एण्ड डेफ स्टडीज' से पारस्परिक शैक्षणिक आदान–प्रदान किया जा रहा है।

दिव्यांगजनों की कृत्रिम अंग एवं अन्य सहायक उपकरणों की आवश्यकताओं की संपूर्ति हेतु 'कृत्रिम अंग एवं पुर्नवास केन्द्र' की स्थापना भी की गई है। दिव्यांग की जरूरत के अनुसार कृत्रिम अंग का निर्माण कर निःशुल्क लगाये जाते है। इस केन्द्र के अन्तर्गत चार वर्षीय बैचलर ऑफ ऑडियोलॉजी एण्ड स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी (बीएएसएलपी) तथा साढ़े चार वर्षीय बैचलर ऑफ प्रोस्थोटिक्स एण्ड आर्थोटिक्स (बीपीओ) पैरामेडिकल पाठ्यक्रम संचालित हैं।

भारतीय पुनर्वास परिषद, भारत सरकार के रिसोर्स सेन्टर के रूप में विश्वविद्यालय में 'सेन्टर फॉर डिसेबिलिटी स्टडीज' काम कर रहा है। इसके अन्तर्गत केन्द्र, राज्य एवं स्थानीय निकायों के अधिकारियों एवं प्रतिनिधियों हेतु इन–सर्विस ट्रेनिंग के अतिरिक्त लघु एवं वृहद शोध परियोजनाएँ संचालित होती हैं। विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश की ऐसी संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान करता है जो नैतिक पाठ्यक्रमों के साथ भारतीय पुनर्वास परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। अभी तक विश्वविद्यालय से छः संस्थाओं/महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदान की जा चुकी है।

विश्वविद्यालय का पूर्णतया बाधारहित हरित परिसर 131 एकड़ के भू–क्षेत्रफल पर विकसित है। भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा विश्वविद्यालय को बाधारहित वातावरण के सृजन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु 'राष्ट्रीय विकलांगता पुरस्कार 2014' प्रदान किया गया है। भारत में सरकारी क्षेत्र का यह एक मात्र विश्वविद्यालय है जो दिव्यांग विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा, छात्रावास एवं मेस सुविधाएँ प्रदान करता है। विश्वविद्यालय में ब्रेल प्रेस एवं डेफ कालेज की स्थापना का प्रस्ताव केन्द्र सरकार के विचाराधीन है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में 'मल्टीमीडिया सेन्टर', 'सेन्टर फॉर मास कम्यूनिकेशन एण्ड जर्नलिज्म', 'फूड एण्ड ड्रग टेस्टिंग सेन्टर' तथा 'सेन्टर फॉर इनोवेशन एण्ड इन्क्यूबेशन' की स्थापना का भी प्रस्ताव है। सम्प्रति परिसर में राज्य सरकार के सहयोग से कक्षा 6 से 12 स्तर का समावेशी शिक्षा का एक आवासीय विशेष विद्यालय स्थापित किया जा रहा है। कृत्रिम अंग एवं पुनर्वास केन्द्र तथा केन्द्रीय पुस्तकालय का निर्माण कार्य भी आरम्भ हो चुका है। उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से शीघ्र ही बैरियर–फ्री स्टेडियम का निर्माण कार्य आरम्भ हो जायेगा। इससे दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन संभव होगा। हमारा सतत् प्रयास है कि उत्कृष्ट समावेशी शिक्षा एवं शोध द्वारा इस विश्वविद्यालय को अन्तरराष्ट्रीय पहचान दिलाई जाय। इसमें सभी का सहयोग लिया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के नवनिर्मित बैरियर–फ्री प्रेक्षागृह में आयोजित इस द्वितीय दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को 241 उपाधियां एवं 67 पदक वितरित किये जा रहे हैं। इसमें 44 पदक छात्राओं एवं 23 पदक छात्रों को मिले हैं। नौ पदक सात दिव्यांग विद्यार्थियों ने प्राप्त किया है। इनमें तीन दिव्यांग छात्राएँ एवं चार दिव्यांग छात्र हैं। इन दिव्यांग विद्यार्थियों की उत्कृष्ट उपलब्धि निश्चय ही प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक है। मैं उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूं। मुझे विश्वास है कि ये विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अपने उत्कृष्ट योगदान द्वारा विश्वविद्यालय और समाज का गौरव बढ़ाएंगे।